सांवरे की नज़र में सँवरता रहूं | By Hari Sharma

बस संवरने की चाह मुझको इतनी रहे
सांवरे की नज़र में सँवरता रहूं
जितनी कृपा की मुझपे मेरे श्याम ने
शुक्रिया मैं भी वैसे ही करता रहूं

सांवरे की पड़ी जबसे मुझपे नज़र
अपने हाथो से जीवन सजाया मेरा
मेरे इस दिल में जितने भी अरमान थे
हर एक सपना हकीकत बनाया मेरा
एक छोटी से ख्वाहिश यही अब मेरी
इनकी चौखट ना छूटे मैं जब तक जियूं
जितनी कृपा की मुझपे मेरे श्याम ने
शुक्रिया मैं भी वैसे ही करता रहूं
बस संवरने की चाह .....

दुनियादारी की मुझको समझ थी नहीं
मेरे अपने ढाते थे मुझपे सितम
सोच करके ही रूह काँप जाती मेरी
हमने देखे हैं अपनों के ऐसे करम
ऐसी हालत में बीते थे मेरे वो दिन
लब हैं खामोश आँखों से मैं सब कहूं
जितनी कृपा की मुझपे मेरे श्याम ने
शुक्रिया मैं भी वैसे ही करता रहूं
बस संवरने की चाह .....

जिसके लायक भी ना था मिला वो मुझे
तीनो लोकों का स्वामी मिला है मुझे
दु:ख के आने की आहट भी होती अगर
गोद में ये उठाकर है चलता मुझे
कोई करता नहीं जितना इसने किया
इतने एहसान मोहित मैं क्या क्या कहूं
जितनी कृपा की मुझपे मेरे श्याम ने
शुक्रिया मैं भी वैसे ही करता रहूं
बस संवरने की चाह .....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b8%e0%a4%be%e0%a4%82%e0%a4%b5%e0%a4%b0%e0%a5%87-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%a8%e0%a4%9c%e0%a4%bc%e0%a4%b0-%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%82-%e0%a4%b8%e0%a4%81%e0%a4%b5%e0%a4%b0%e0%a4%a4%e0%a4%be/